# पाठ–४ : हरी–हरी दूब पर

## ❖ शब्दार्थ

क्वाँर – आश्विन का महीना
बगीची – छोटी बगिया
ताप – गरमी
झुठलाना – नकारना, असत्य ठहराना
क्षणिक – पल भर रहनेवाला

## ❖ सही उत्तर पर सही का निशान लगाइए ।

क) कैसी दूब पर ओस की बूँदे थी ?
( ) सूखी ( ) पीली (✓) हरी–हरी ( ) सफेद

ख) कवि के अनुसार वह कौन–सा सत्य है, जिसे झुठलाया नहीं जा सकता?
( ) सागर ( ) सूर्य (✓) धरती ( ) क्षणिक

ग) क्वाँर की कोख से क्या फूटा ?
( ) ज्वार ( ) कास ( ) सूर्य (✓) बाल सूर्य

घ) बगीची का पत्ता–पत्ता क्यों जगमगाने लगा ?
( ) सूर्यास्त होने से (✓) सूर्योदय होने से
( ) दोपहर होने से ( ) लाल बादलों से

च) कविता में 'ओस' किसका प्रतीक है ?
( ) शाश्वत खुशियों का (✓) क्षणिक खुशियों का
( ) मोक्ष का ( ) कष्टों का

## शब्द–संपदा

## ❖ निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए ।

बाल – बालक, बच्चा, शिशु
बगीची – बगीचा, वाटिया, उपवन, बाग
धूप – ताप, प्रकाश, तपस, रवि, गरमी
पत्ता – पत्र, पर्ण, पात
सूर्य – दिनकर, रवि, भानु, भास्कर
मौसम – ऋतु, ऋतुपति, माघ, बसंत

## ❖ निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए ।

खुशी × गम
उगना × डूबना
क्षणिक × शाश्वत
पूरब × पश्चिम
ताप × शीत
सत्य × असत्य

## ❖ काव्य पंक्तियों का आशय

क) ऐसी खुशियाँ
जो हमेशा हमारा साथ दें,
कभी नहीं थी

कहीं नहीं है ।

उ) कवि का कहना है कि सुख और दुख जीवन में आते-जाते रहते है । हमें इस सच्चाई को स्वीकार करना चाहिए । सारे संसार में ऐसी कोई खुशी नहीं है और न कभी थी जो हमेशा बनी रहे ।

ख) सूर्य एक सत्य है
जिसे झुठलाया नहीं जा सकता
मगर ओस भी तो एक सच्चाई है ।

उ) कवि कहते है कि सूरज और ओर दोनों ही सच है । सूर्य ऐसा सच है जो सदा रहने वाला है और ओर थोडे समय रहती है पर उसका भी अपना अस्तित्व है ।

## पाठ-ज्ञान

### ❖ मौखिक प्रश्न

१) कौन अभी थी, अब नहीं है ?

उ) ओंस की बूँदे अभी थी, अब नहीं है ।

२) खुशियों के बारे में कवि की क्या धारणा है ?

उ) खुशियों के बारे में कवि की धारणा है कि हंमेशा हमारा साथ देने वाली खुशियाँ कभी नहीं थी और कहीं नहीं है ।

३) कवि किस अंतद्वन्द्व में फँसा हुआ है ?

उ) कवि अंतद्वन्द्व में फँसा है कि, आश्विन में पूरब की गोद में बगीची के जगमगाते पत्तों के उगते सूर्य को नमस्कार करुँ कि उन पत्तों पर गर्मी से भाप बनी, ओस की बूँदो को ढूँढू।

४) ओस को 'क्षणिक' कहकर कवि क्या कहना चाहता है ?

उ) जिस तरह हम सूर्योदय का आनंद उठाते है उसी तरह हरे-हरे पत्तों पर पडी ओस की बूँद तो पल भर की है, एक क्षणभर के लिए होती है । वह हमें हर मौसम में देखने को नहीं मिलती है ।

### ❖ प्रश्नों के उत्तर

१) कवि ने उगते सूर्य का चित्रण कैसे किया है ?

उ) कवि ने कहा है कि सूर्य को उदित होता देखकर लगा कि क्वाँर मास की कोख से जन्म लेकर बाल सूर्य ने पूर्व दिशा में अपने पैर फैलाना आरंभ किया । अर्थात् सूर्य पूर्व दिशा से उदय हुआ और धीरे-धीरे उसका प्रकाश फैलने लगा ।

२) 'ओस की बूँदों को ढूँढने' से क्या आशय है ?

उ) ओस की बूँदों को ढूँढने का आशय है छोटी-छोटी खुशियों को ढूँढना और उनको जीना ।

३) 'क्यों न मैं क्षण-क्षण को जीऊँ' से कवि का क्या आशय है ?

उ) 'क्यों न मैं क्षण-क्षण को जीऊँ' से कवि कहना चाहते है कि हम जीवन में हर क्षण की सुंदरता को अपनी आँखों से देखें और उसका आनंद लें ।

४) क्षणिक खुशियों के बारे में कवि की क्या धारणा है ?

उ) क्षणिक खुशियों के बारे में कवि ने कहा है कि वे अभी तो थीं पर शीघ्र ही समाप्त हो गई । हम बहुत सजग रहकर ही छोटी खुशियों को जी सकते है ।

५) कविता को पढकर क्या आपको ऐसा लगता है कि कवि शाश्वत खुशियों के प्रति उदासीन है ? तर्क सहित बताइए ।

उ) इस कविता में कवि शाश्वत खुशियों के प्रति उदासीन नहीं है । वह जानता है कि कोई ऐसी खुशी नहीं है जो सदा रहनेवाली है । इसलिए जब जो खुशी मिले उसका आनंद उठाना चाहिए ।

## ❖ रिक्त स्थान की पूर्ति

१) दृश्यमान वस्तुएँ नश्वर है ।

२) हरी-हरी दूब पर ओस की बूँद थी ।

३) क्वरि की कोख से फूटा बाल सूर्य

४) हरी-हरी दूब पर काव्य के लेखक श्री अटल बिहारी बाजपेयी है ।

५) ओस की बूँद क्षणिक है ।

६) सूर्य को झुठलाया नहीं जा सकता ।

## ❖ सही या गलत

१) कविता में ओस कष्टों का प्रतीक है । ×

२) क्वरि की कोख से बाल सूर्य फूटा । ✓

३) हरी-हरी दूब पर ओस की बूँद थी । ✓

४) सूर्यास्त होने से बगीची का पत्ता भी मुरझाने लगा । ✓

५) ओस की बूँद हंमेशा रहती है । ×

## ❖ Assignment

१) अटल बिहारी बाजपेयी की फोटो लगाकर उनके विषय में लिखिए ।